Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

तलाक की बढ़ती प्रवृत्ति : समाज का बदलता चेहरा

हेमन्त कुमार जैन*

***शोधार्थी, क 8 सेक्टर 5 हिरणमगरी उदयपार्क, उदयपुर (राज.) भारत**

प्रस्तावना – भारतीय संस्कृति में विवाह को हमेशा से सबसे पवित्र और स्थायी संबंध माना गया है। यह केवल दो व्यक्तियों का साथ नहीं होता, बल्कि दो परिवारों, दो संस्कृतियों और दो परंपराओं का मिलन भी होता है (शर्मा, 2017)। विवाह का अर्थ जीवनभर साथ निभाने की प्रतिज्ञा है, लेकिन आज के समय में यह बंधन पहले जैसी मजबूती के साथ कायम नहीं रह पा रहा है। आधुनिक जीवनशैली, बदलते सामाजिक मूल्य और बढ़ती आत्मनिर्भरता ने विवाह संस्था को नई चुनौतियों के सामने खड़ा कर दिया है (मिश्रा, 2019)। यही कारण है कि तलाक की घटनाएँ तेजी से बढ़ रही हैं और समाज का चेहरा बदल रहा है।

बीते एक दशक में देश में तलाक के मामलों में उल्लेखनीय बढ़ोतरी दर्ज की गई है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB, 2023) और विभिन्न सामाजिक सर्वेक्षणों की रिपोर्ट बताती हैं कि महानगरों और शहरी क्षेत्रों में तलाक की दर खास तौर पर चिंताजनक स्तर तक पहुँच चुकी है। यद्यपि भारत की तलाक दर अभी भी पश्चिमी देशों की तुलना में काफी कम है, लेकिन बढ़ती संख्या यह स्पष्ट करती है कि विवाह संस्था के प्रति लोगों की सोच और दृष्टिकोण बदल रहे हैं (सेनगुप्ता, 2022 Desai & Patel, 2021)।

सबसे बड़ा कारण महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता है। शिक्षा और नौकरी ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बना दिया है (कौशल, 2020)। पहले जहाँ महिलाएँ सामाजिक दबाव और आर्थिक मजबूरी के कारण अपमानजनक या असमान रिश्ते सहने के लिए बाध्य रहती थीं, वहीं अब वे अपने अधिकारों के प्रति सजग हो चुकी हैं (अग्रवाल, 2019)। वे बराबरी और सम्मान चाहती हैं, और यदि उन्हें यह नहीं मिलता तो वे रिश्ते को समाप्त करने का साहस भी रखती हैं। यह बदलाव सकारात्मक भी है क्योंकि इससे महिलाओं की स्थिति मजबूत हुई है, लेकिन इसका एक पहलू यह भी है कि विवाह टूटने की घटनाएँ बढ़ रही हैं (Sharma & Mehta, 2021)।

दूसरा कारण है आधुनिक जीवनशैली और बढ़ती अपेक्षाएँ। आज की युवा पीढ़ी भावनात्मक, मानसिक और भौतिक हर दृष्टि से ऊँची उम्मीदें रखती है (Patel, 2020)। पति-पत्नी दोनों ही जीवन से अधिक सुविधा और अधिक सुख चाहते हैं। लेकिन जब अपेक्षाएँ पूरी नहीं होतीं, तो असंतोष और कलह जन्म लेने लगते हैं। छोटी-सी असहमति धीरे-धीरे गहरी खाई में बदल जाती है और रिश्ता टूटने की कगार पर पहुँच जाता है (Singh, 2022 Sen, 2023)।

रिश्तों में संवाद की कमी भी तलाक का एक बड़ा कारण बन रही है। पहले परिवारों में लोग खुलकर बात करते थे और समस्याओं का समाधान आपसी बातचीत से निकाल लेते थे। आज व्यस्त जीवनशैली, काम का दबाव और तकनीक पर निर्भरता ने संवाद को कमजोर कर दिया है। पति-पत्नी के बीच खुलकर बातचीत न होने के कारण गलतफहमियाँ बढ़ जाती हैं और सहनशीलता में भी कमी आती है।

सोशल मीडिया और डिजिटल युग ने भी रिश्तों को गहराई से प्रभावित किया है। वर्चुअल दुनिया ने लोगों को करीब लाने के बजाय दूर कर दिया है। ऑनलाइन रिश्ते सतही हो गए हैं, और अक्सर शक, अविश्वास और अफवाहें रिश्तों को तोड़ देती हैं। पति-पत्नी के बीच विश्वास की नींव जब कमजोर पड़ती है, तो रिश्ते ज्यादा समय तक टिक नहीं पाते।

संयुक्त परिवारों का टूटना भी तलाक की प्रवृत्ति को बढ़ाने में अहम भूमिका निभा रहा है। पहले बड़े-बुजुर्ग विवादों को सुलझाने और रिश्तों को बचाने में मध्यस्थता करते थे। उनका अनुभव और समझदारी रिश्तों को संभाल लेती थी। लेकिन अब एकल परिवारों में युवा दंपति अपने फैसले खुद लेते हैं और कई बार जल्दबाजी में तलाक तक पहुँच जाते हैं।

तलाक के प्रभाव केवल पति-पत्नी तक सीमित नहीं रहते, बल्कि इसका सबसे गहरा असर बच्चों पर पड़ता है (कुमार, 2018)। टूटा हुआ परिवार बच्चे के लिए मानसिक आघात का कारण बनता है। वह असुरक्षा, अकेलेपन और उलझन का शिकार हो जाता है (Verma & Thomas, 2020)। ऐसे बच्चे प्राय: भावनात्मक असंतुलन, आत्मविश्वास की कमी और सामाजिक अनुकूलन की कठिनाइयों से जूझते हैं।

इसके अलावा, महिलाएँ भी तलाक के बाद कई बार सामाजिक असुरक्षा महसूस करती हैं (शर्मा, 2021)। भारतीय समाज में आज भी तलाकशुदा महिला के प्रति दृष्टिकोण पूर्णत: समानता का नहीं है, जिससे उन्हें सामाजिक पुन:स्वीकार्यता में कठिनाई होती है (Chakraborty 2022)। समाज में रिश्तों की स्थिरता कमजोर होने लगती है और मानसिक तनाव बढ़ता है, जो परिवार संस्था की जड़ों को प्रभावित करता है (Patel, 2023)।

फिर भी तलाक को केवल नकारात्मक रूप से नहीं देखा जाना चाहिए। इसे कभी-कभी सुधार और नई शुरुआत का अवसर भी माना जा सकता है। ऐसे कई विवाह होते हैं जहाँ लगातार अपमान, हिंसा या असमानता बनी रहती है। ऐसे में तलाक उन व्यक्तियों के लिए एक राहत और नए जीवन की शुरुआत का मार्ग बन सकता है। लेकिन समाज को यह भी समझना होगा कि तलाक हमेशा पहला विकल्प नहीं होना चाहिए।

समाधान की दिशा में कई कदम उठाए जा सकते हैं। विवाह पूर्व परामर्श

एक कारगर उपाय हो सकता है जिससे पति-पत्नी एक-दूसरे की सोच, जीवनशैली और अपेक्षाओं को पहले से समझ सकें। रिश्तों में संवाद को प्रोत्साहित करना जरूरी है ताकि छोटी-छोटी गलतफहमियाँ गहरी खाई में न बदलें। मीडिया को भी इस विषय पर जिम्मेदार रुख अपनाना चाहिए और समाज को संवेदनशील दृष्टिकोण देने की कोशिश करनी चाहिए। इसके अलावा जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को वैवाहिक जीवन में धैर्य, सहनशीलता और आपसी सम्मान के महत्व को समझाना भी आवश्यक है।

अंततः तलाक की बढ़ती प्रवृत्ति केवल वैवाहिक जीवन की समस्या नहीं है, बल्कि यह हमारे समाज और मानसिकता में हो रहे बदलाव का संकेत भी है। हमें इसे एक सामाजिक चुनौती के रूप में स्वीकार करना होगा और परिवारों को टूटने से बचाने के लिए सामूहिक प्रयास करने होंगे। यदि समय रहते इस दिशा में गंभीर पहल नहीं की गई, तो आने वाले समय में पारिवारिक और सामाजिक जीवन और भी अधिक प्रभावित हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. शर्मा, आर. (2017). भारतीय विवाह संस्था: परंपरा और परिवर्तन. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
2. मिश्रा, एस. (2019). आधुनिक समाज और वैवाहिक संबंधों का रूपांतरण. वाराणसी: भारती प्रकाशन।
3. राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB). (2023). *Crime in India 2022 – Statistics on Matrimonial Disputes and Divorce Cases*. नई दिल्ली: गृह मंत्रालय, भारत सरकार।
4. सेनगुप्ता, पी. (2022). *Changing Trends in Urban Marriages: A Sociological Perspective*. *Indian Journal of Social Research*, 63(4), 112–124.
5. Desai, M., & Patel, R. (2021). *Marriage and Divorce Trends in India: Changing Patterns of Family Structure*. *Journal of Family Studies*, 27(3), 450–468.
6. अग्रवाल, र. (2019). भारतीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति और वैवाहिक जीवन का पुनर्परिभाषण. नई दिल्ली: साहित्य भवन।
7. कौशल, एस. (2020). महिला सशक्तिकरण और आर्थिक आत्मनिर्भरता: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
8. Patel, R. (2020). *Modern Lifestyle and Marital Expectations in Urban India*. *Journal of Contemporary Sociology*, 58(2), 175–190.
9. Sharma, P., & Mehta, D. (2021). *Women Empowerment and Changing Marital Dynamics in India*. *Indian Journal of Gender Studies*, 28(3), 342–360.
10. Singh, A. (2022). *Marital Conflicts and Emotional Expectations in the Modern Age*. *Sociological Bulletin*, 71(4), 210–225.
11. Sen, N. (2023). *Changing Attitudes Toward Marriage Among Indian Youth*. *Asian Social Science Review*, 12(1), 55–72.
12. कुमार, एस. (2018). तलाक और भारतीय समाज: मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन. वाराणसी: गंगापुत्र प्रकाशन।
13. Verma, R., & Thomas, A. (2020). *Psychological Consequences of Divorce on Children in Indian Context*. *Journal of Family Psychology*, 34(2), 189–204.
14. शर्मा, आर. (2021). भारतीय महिला और तलाक के बाद की सामाजिक चुनौतियाँ. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
15. Chakraborty, S. (2022). *Divorced Women and Social Reintegration in Contemporary India*. *Indian Journal of Social Work*, 83(3), 290–308.
16. Patel, N. (2023). *Marital Instability and Its Impact on Family Cohesion in Urban India*. *Asian Journal of Sociology and Psychology*, 14(1), 112–128.

****